



दिसम्बर: 2023



वर्ष : 7 अंक : 3

# सिफरी मासिक समाचार

क्रिसमस पर्व की  
हार्दिक शुभकामनाएँ



# नील क्रांति की ओर अग्रसर



## निदेशक की कलम से



“असफलता मात्र फिर से कार्याम्भ करने की प्रेरणा होती है, इस बार और अधिक बुद्धिमत्ता से।” हेनरी फोर्ड

सर्वप्रथम आप सभी को क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई। प्रेम और सौहार्द का पर्व, क्रिसमस का इतिहास कई हजार साल पुराना है।

इस पर्व पर क्रिसमस ट्री का विशेष महत्व होता है क्योंकि इसे जीवन की निरंतरता का प्रतीक माना जाता है।

संस्थान का मासिक न्यूजलेटर के इस अंक में नवंबर, 2023 में संस्थान के गतिविधियों और कार्यक्रमों की झलकियां प्रस्तुत है।

दिसंबर का महीना वर्ष का अंतिम माह है जो नए वर्ष के आगमन का संदेश लेकर आता है। साथ ही हमें यह प्रेरणा देता है कि हम सभी एक आत्म विश्लेषण करें ताकि नए वर्ष के लिए लक्ष्य सुनिश्चित करने के साथ अपने जीवन को और भी सफल बनाने के लिए प्रयास कर सकें।

मैं पुनः आप सभी को क्रिसमस पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देता हूँ और आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

बि.के.एस.

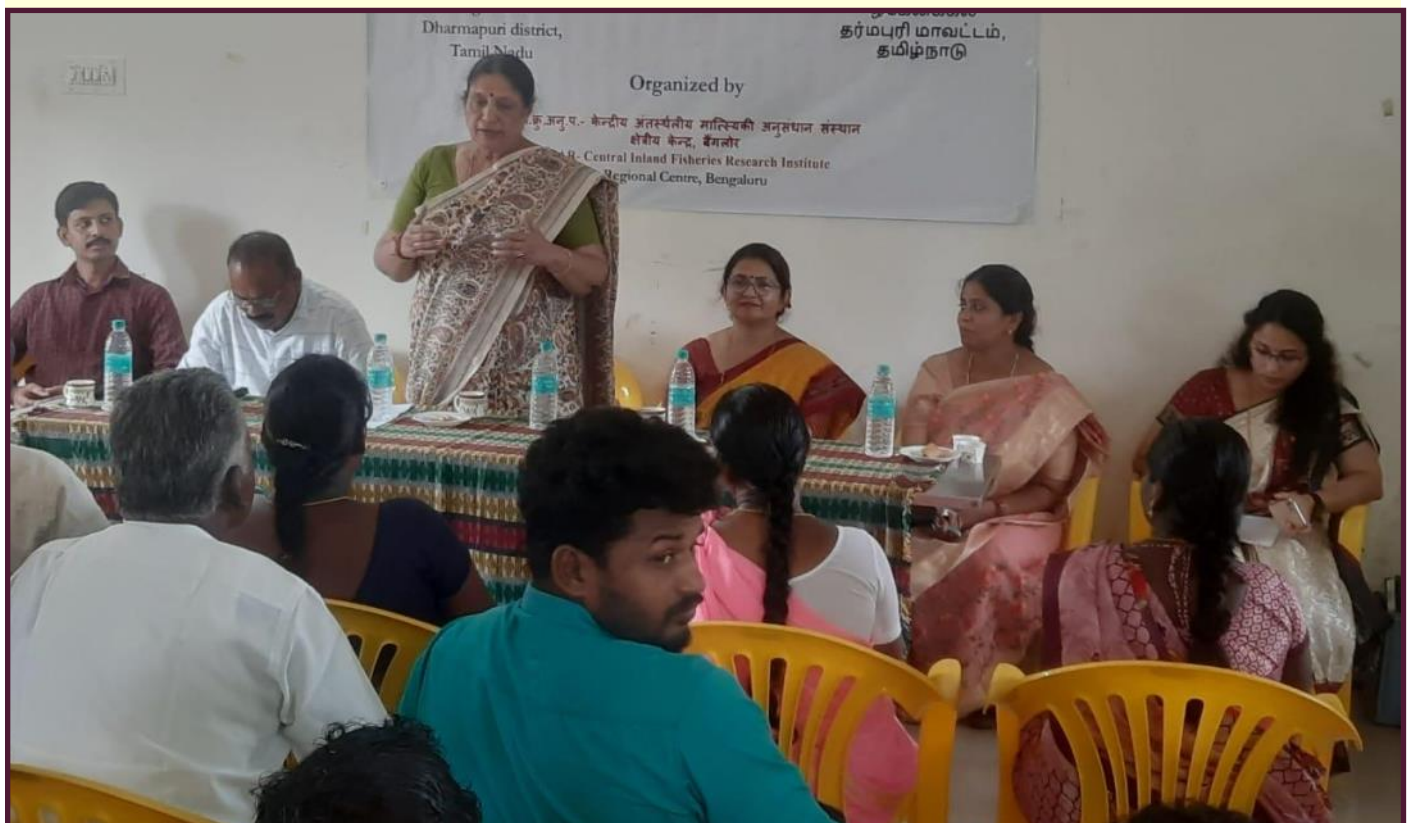
(बसन्त कुमार दास)



## तमिलनाडु के होगेनकल में टीएसपी कार्यक्रम के तहत मछली पकड़ने और मछुआरों को कोरेकल के वितरण पर जन जागरूकता कार्यक्रम



डॉ वि के दास निदेशक, आईसीएआर-सिफरी के मार्गदर्शन में 02 नवंबर 2023 को तमिलनाडु के धर्मपुरी जिले के होगेनकल में भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) के बेंगलुरु क्षेत्रीय केंद्र- द्वारा मछली पकड़ने पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम जनजातीय उपयोजना( टीएसपी) के तहत आयोजित किया गया था और इसमें 50 मछुआरों ने भाग लिया। 10 आदिवासी मछुआरों को कोरेकल वितरित किया गया। वैज्ञानिक डॉ वी एल राम्या ने सभा का





स्वागत किया। डॉ. प्रीता पणिक्कर, प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र, आईसीएआर-सिफरी ने परिचयात्मक टिप्पणी दी और अंतर्स्थलीय मात्स्यिकीपालन क्षेत्र के सुधार में संस्थान की भूमिका पर भी बात की। डॉ. मीनाकुमारी, पूर्व उप महानिदेशक ( मत्स्य विज्ञान) भा०कृ०अनु०प०., नई दिल्ली ने सभा को संबोधित किया और उन्हें मछली पकड़ने के बारे में बताया। धर्मपुरी क्षेत्र के मत्स्य पालन के उप निदेशक श्री सी सुब्रमणि ने अध्यक्षीय भाषण दिया। धर्मपुरी जिले के सहायक मत्स्य निदेशक श्री जी गोकुलरामन ने मछुआरों के कल्याण के लिए विभिन्न विभागीय योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। वैज्ञानिक सुश्री जेसना पी. के. ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. प्रीता पणिक्कर, डॉ. वीएल, राम्या और सुश्री जेसना पी. के. द्वारा किया गया और सह-समन्वय डॉ. सिबिना मोल एस और डॉ. सोनालिका साहू द्वारा किया गया।



**भा०कृ०अनु०प०. - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने त्रिपुरा के डंबूर जलाशय में पिंजरे में रहने वाले मछुआरों के लिए इनपुट वितरण-सह-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया**



भा०कृ०अनु०प०.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने 4 नवम्बर 2023 को मत्स्य पालन विभाग, त्रिपुरा सरकार के सहयोग से मत्स्य पालन कार्यालय, गंडाचेरा (गंदतविसा) में त्रिपुरा के डंबूर जलाशय में पिंजरे जलीय कृषि को लोकप्रिय बनाने के लिए एक 'इनपुट वितरण-सह-जागरूकता कार्यक्रम' का आयोजन किया। कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में श्रीमती नंदिता देवबर्मा रियांग, माननीय विधायक, 44-राइमा वैली, त्रिपुरा; श्री संतोष दास, टीसीएस (एसएसजी), मत्स्य पालन निदेशक, सरकार। त्रिपुरा का; श्री अरिंदम दास, टीसीएस, एसडीएम, गैंडटविसा; श्री एन.जी. नोआतिया, डीडीएफ, मत्स्य पालन विभाग, त्रिपुरा सरकार सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आरंभ में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं





कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. दीपेश देबनाथ ने डुंबुर जलाशय के मछुआरों का मत्स्य पालन अधीक्षक कार्यालय में स्वागत किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि डुंबुर जलाशय में केज कल्चर के माध्यम से त्रिपुरा में मछली उत्पादन बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं। त्रिपुरा सरकार के मत्स्य पालन विभाग के उप निदेशक मत्स्य पालन श्री एन जी नोआटिया ने पिंजरे में मछली पालन के लाभ और लागत अनुपात के बारे में विस्तार से बताया और दोहराया कि अगर पिंजरे में मछली पालन वैज्ञानिक आधार पर की जाए तो यह अत्यधिक लाभदायक है। श्री अरिंदम दास, टीसीएस, एसडीएम, गंडतविसा ने कहा कि डुंबुर की मछलियों की अतीत में बहुत मांग थी और मछली की उपलब्धता भी बहुत अधिक थी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जलाशय से मछली उत्पादन में गिरावट अंधाधुंध मछली पकड़ने और अवैध गियर के उपयोग सहित कई मानवजनित कारकों के कारण हुई। श्री संतोष दास, टीसीएस, मत्स्य निदेशक, त्रिपुरा सरकार ने मछुआरों और मछली किसानों से वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को अपनाने का आग्रह किया जिससे उत्पादन में सुधार होगा। उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिक प्रबंधन से डुंबुर जलाशय से मछली उत्पादन दोगुना किया जा सकता है, जिससे अन्य राज्यों से मछलियों की आमद कम हो सकती है। कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. श्यामल सी.एस. दास ने त्रिपुरा सरकार के मत्स्य पालन विभाग से कैप्चर और कल्चर मत्स्य पालन (यानी, पिंजरे की संस्कृति) के माध्यम से मछली उत्पादन का रिकॉर्ड रखने का आग्रह किया। श्रीमती नंदिता देबबर्मा रियांग, माननीय विधायक, 44-राइमा वैली, त्रिपुरा ने अपने संबोधन में मछुआरों से आईसीएआर-सिफरी के वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित किए जा रहे जागरूकता कार्यक्रम से अधिकतम लाभ उठाने का आग्रह किया। तकनीकी सत्र में डॉ. दीपेश देबनाथ ने डुंबुर जलाशय से संबंधित केज कल्चर तकनीक के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की। कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. श्यामल सी.एस. दास ने प्रतिभागियों से बातचीत की और उनके द्वारा उठाए गए सभी प्रश्नों के उत्तर दिए। कार्यक्रम के माननीय प्रतिनिधियों द्वारा डुंबुर के केज मछुआरों के बीच कुल 7000 किलोग्राम



सिफरी केजग्रो फ्लोटिंग फिश फीड का समारोहपूर्वक वितरण किया गया। कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर-सिफरी के एनईएच घटक के तहत डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर और डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के गतिशील नेतृत्व में किया गया था।

## केंद्रीय अंतर्स्थलीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान ने पिंजरे में मछली पालन पर किसानों के ज्ञान सशक्तिकरण कार्यक्रम का उद्घाटन किया



भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी), बैरकपुर, कोलकाता ने आज बांकुरा और पुरुलिया जिलों के किसानों के लिए पश्चिम बंगाल सरकार के मत्स्य पालन विभाग के सहयोग से केज कल्चर के माध्यम से मछली उत्पादन बढ़ाने पर अपनी तरह के पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। यह कार्यक्रम आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में आयोजित किया जा रहा है, और इसका उद्देश्य मछली किसानों और उद्यमियों को पिंजरे की खेती में नवीनतम प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं पर ज्ञान और कौशल प्रदान करना है।

केज कल्चर एक टिकाऊ और उच्च उपज देने वाली जलीय कृषि पद्धति है जो अंतर्स्थलीय खुले पानी से मछली उत्पादन को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दे सकती है। इसमें तैरते हुए पिंजरे में मछली पालना शामिल है, जिन्हें जलाशयों, झीलों और नदियों में स्थापित किया जा सकता है। केज कल्चर पारंपरिक जलीय कृषि पद्धतियों की तुलना में कई फायदे प्रदान करता है, जिसमें उच्च भंडारण घनत्व, भोजन की निगरानी में आसानी, प्रबंधन और फसल के अलावा पानी की गुणवत्ता में सुधार और बीमारी के प्रकोप को कम करना शामिल है।

यह व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम पिंजरे के डिजाइन और निर्माण, साइट चयन, स्टॉकिंग घनत्व, फीड प्रबंधन और रोग नियंत्रण पर व्यावहारिक कक्षाएं, रोग निदान और उपचार, और पानी की गुणवत्ता पैरामीटर विश्लेषण सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करेगा। प्रतिभागियों को क्षेत्रीय प्रदर्शनों के माध्यम से पिंजरे की खेती में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का भी अवसर मिलेगा।

उद्घाटन समारोह में, आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने कहा, “पिंजरे की संस्कृति में विशाल प्राकृतिक संसाधनों से पश्चिम बंगाल में मछली उत्पादन में तेजी लाने और क्रांति लाने की क्षमता है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम मछली किसानों और



उद्यमियों को इस तकनीक को सफलतापूर्वक अपनाने और उनकी आय के साथ-साथ मछली की पैदावार बढ़ाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करेगा।

आईसीएआर-सिफरी के कुशल नेतृत्व में पहली बार केज कल्चर तकनीक का प्रदर्शन कांसाबती जलाशय, बांकुरा में चल रहा है, जिससे राज्य देश में केज कल्चर में विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है। प्रशिक्षण कार्यक्रम से पश्चिम बंगाल में बड़ी संख्या में मछली किसानों और उद्यमियों को लाभ होने की उम्मीद है, और यह राज्य में जलीय कृषि क्षेत्र के समग्र विकास में योगदान देगा।



## आईसीएआर-सिफरी, बैंगलोर के क्षेत्रीय केंद्र ने "अंतर्स्थलीय जल निकायों में मत्स्य पालन संवर्धन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।



7 से 9 नवंबर, 2023 के दौरान आईसीएआर के क्षेत्रीय केंद्र- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा "अंतर्स्थलीय जल निकायों में मत्स्य पालन संवर्धन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम सिफरी के निदेशक डॉ बि. के. दास के मार्गदर्शन में ऑनलाइन मोड पर आयोजित किया गया था।

विभिन्न राज्य सरकार के मत्स्य पालन संस्थानों, विश्वविद्यालयों, मत्स्य पालन विभाग से क्रमशः छात्रों, अनुसंधान विद्वानों, वैज्ञानिकों, सहायक प्रोफेसरो, सहायक निदेशक और मत्स्य पालन निरीक्षकों सहित कुल 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र, बिहार और कर्नाटक राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बी के दास के उद्घाटन भाषण से हुई। उन्होंने अंतर्स्थलीय जल निकायों से मछली उत्पादकता में सुधार के लिए संस्थान द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। क्षेत्रीय केंद्र की प्रमुख डॉ. प्रीता पणिक्कर ने भारत में







अंतर्स्थलीय मात्स्य पालन क्षेत्र की वर्तमान स्थिति पर बात की और देश में मत्स्य पालन को बढ़ाने में जलाशयों की भूमिका पर व्याख्यान दिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, आईसीएआर-सिफरी के बैंगलोर केंद्र और कोच्चि इकाई के वैज्ञानिकों द्वारा मत्स्य पालन वृद्धि प्रथाओं, मछली पकड़ने की तकनीक, मछली रोग प्रबंधन और अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव सहित विभिन्न पहलुओं से संबंधित कई विषयों पर चर्चा की गई। आईसीएआर-सीआईएफए, बैंगलोर के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने स्थानिक कार्प के बीज उत्पादन में संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीक पर बातचीत की। समापन सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत की। सत्र वैज्ञानिक डॉ. सिबिना मोल एस. के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुआ। कार्यक्रम का समन्वयन केंद्र की प्रमुख डॉ. प्रीता पणिक्कर और वैज्ञानिक डॉ. वीएल राम्या द्वारा किया गया; वैज्ञानिक डॉ. सिबिना मोल एस द्वारा सह-समन्वय; सुश्री जेसना पी के, वैज्ञानिक और डॉ. विजयकुमार एम ई, एसटीओ द्वारा सहायता प्रदान की गई।



## आईसीएआर-सिफरी ने "नदी पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन प्रबंधन में हालिया प्रगति" पर लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया



भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकीअनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 07 से 13 नवंबर 2023 तक "नदी पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन प्रबंधन में हालिया प्रगति" पर एक अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य टिकाऊ नदी पारिस्थितिकी तंत्र और मत्स्य पालन की दिशा में हाल के तकनीकी हस्तक्षेपों पर "शिक्षण और अनुसंधान संकायों और छात्रों के लिए क्षमता निर्माण" पर था।

कार्यक्रम का उद्घाटन आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास, डॉ. एम. ए. हसन, प्रमुख एफईएम, और डॉ. ए.के.बेरा, प्रमुख, आईबी डिवीजनकी उपस्थिति में किया गया। प्रारंभ में, समन्वयक डॉ. ए.के. साहू ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया और कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षण और अनुसंधान संकायों और छात्रों सहित कुल 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया है। निदेशक डॉ. बि. के.



दास ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि कार्यक्रम अधिक इंटरैक्टिव और व्यावहारिक होना चाहिए। उन्होंने नदी बेसिन प्रबंधन के लिए समूह की गतिशीलता विकसित करने और वैचारिक मॉडल विकसित करने की सलाह दी। इसके अलावा, उन्होंने उन्नत उपकरणों के माध्यम से नदी पशुपालन और नदी जर्मप्लाज्म के संरक्षण की अवधारणा पर प्रकाश डाला। नदी पारिस्थितिकी तंत्र में वर्तमान तनावों को महसूस करते हुए, डॉ. दास ने सराहना की



कि वर्तमान प्रशिक्षण कार्यक्रम आईसीएआर-सिफरी द्वारा 1947 से उत्पन्न वैज्ञानिक ज्ञान के हस्तांतरण में मदद करेगा। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अधिक संवादात्मक और समय के पाबंद होने का आग्रह किया। डॉ. दास ने कार्यक्रम के सफल समापन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. डॉ. बी.के. दास के मार्गदर्शन में ए.के. साहू, एस.के. सामंता, और रोसिथ सी.एम., संगीता नायर और प्रणब गोगोई।

कार्यक्रम का उद्घाटन आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बी. , डॉ. एम ए हसन, प्रमुख एफईएम, और डॉ. ए.के.बेरा, प्रमुख, आईबी डिवीजन। प्रारंभ में, समन्वयक डॉ. ए.के. साहू ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया और कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षण और अनुसंधान संकायों और छात्रों सहित कुल 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया है। निदेशक डॉ. बी.के. दास ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि कार्यक्रम अधिक इंटरैक्टिव और व्यावहारिक होना चाहिए। उन्होंने नदी बेसिन प्रबंधन के लिए समूह की गतिशीलता विकसित करने और वैचारिक मॉडल विकसित करने की सलाह दी। इसके अलावा, उन्होंने उन्नत उपकरणों के माध्यम से नदी पशुपालन और नदी जर्मप्लाज्म के संरक्षण की अवधारणा पर प्रकाश डाला। नदी पारिस्थितिकी तंत्र में वर्तमान तनावों को महसूस करते हुए, डॉ. दास ने सराहना की कि वर्तमान प्रशिक्षण कार्यक्रम सिफरी द्वारा 1947 से उत्पन्न वैज्ञानिक ज्ञान के हस्तांतरण में मदद करेगा। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अधिक संवादात्मक और समय के पाबंद होने का आग्रह किया। डॉ. दास ने कार्यक्रम के सफल समापन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. बी.के. दास के मार्गदर्शन में डॉ.



## बिहार के नवादा जिले के मछली किसानों का क्षमता विकास: आईसीएआर-सिफरी की एक पहल



आईसीएआर- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 03-09 नवंबर 2023 के दौरान नवादा जिले, बिहार के मछली किसानों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 मछली किसानों और मत्स्य विकास अधिकारी ने भाग लिया। डॉ. बि.के. दास, आईसीएआर-सिफरी ने किसानों के साथ बातचीत की और उन्हें स्थायी आजीविका हासिल करने के लिए अपना ज्ञान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने मछुआरों से उत्पादन और उत्पादकता को अधिकतम करने के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने का आग्रह किया।





प्रशिक्षुओं को जल गुणवत्ता प्रबंधन, तालाब संस्कृति, नर्सरी में मछली पालन, आजीविका सुधार के लिए बाड़े की संस्कृति और प्रेरित प्रजनन और हैचरी प्रबंधन पर कुछ बुनियादी ज्ञान के साथ जागरूक किया गया। प्रतिभागियों को मछली चारा प्रबंधन और मछली रोग प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को सिखाया गया। प्रशिक्षण सत्रों के दौरान जलवायु परिवर्तन और अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन पर इसके प्रभाव पर एक सामान्य अवलोकन शामिल किया गया। मछली किसानों को संस्थान के रीसर्कुलेटरी एकाकल्चर सिस्टम (आरएएस), सजावटी हैचरी इकाइयों और मछली चारा मिल से भी परिचित कराया गया।

यह कार्यक्रम तालाबों और टैंकों सहित खुले पानी में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए और क्षेत्र भ्रमण दौरों के माध्यम से किसानों के व्यावहारिक कौशल को मजबूत करने के लिए उन्मुख है। हलिसहर मछली फार्म, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड, सजावटी मछली बाजार



और आईसीएआर-सीआईएफए, कल्याणी अनुसंधान केंद्र का दौरा करने के लिए क्षेत्र यात्रा का आयोजन किया गया था। सप्ताह भर चलने वाला कार्यक्रम 09 नवंबर 2023 को सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण के साथ संपन्न हुआ। प्रशिक्षुओं ने क्षमता निर्माण कार्यक्रम से उच्च स्तर की संतुष्टि व्यक्त की।

## आईसीएआर-सिफरी, गुवाहाटी ने बाड़े की संस्कृति पर पूर्वोत्तर राज्यों के मत्स्य पालन अधिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।



भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), बैरकपुर ने 8-10 नवंबर, 2023 के दौरान अपने गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र में 'उत्पादन वृद्धि के लिए अंतर्स्थलीय खुले पानी में बाड़े की संस्कृति' पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। यह पूर्वोत्तर राज्यों के मत्स्य पालन विभागों के अधिकारियों को जलाशयों, आर्द्रभूमियों, नदियों और क्षेत्र के अन्य खुले जल निकायों के स्थायी मत्स्य प्रबंधन पर प्रशिक्षित करने के लिए संस्थान द्वारा योजनाबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला है। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित किए जा रहे हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से, आईसीएआर-सिफरी अंतर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन में अपने अनुसंधान और आउटरीच गतिविधियों के माध्यम से संस्थान द्वारा उत्पन्न अद्यतन तकनीकी ज्ञान का प्रसार करेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र 8 नवंबर, 2023 को आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न उत्तर पूर्वी राज्यों (असम, मेघालय, मणिपुर, सिक्किम, त्रिपुरा), आईआईटी गुवाहाटी, कछार कॉलेज सिलचर और कोलॉग-कोपिली (एनजीओ), बोगीबारी, असम के 26 मत्स्य अधिकारियों ने भाग लिया था। डॉ. सोना येंगकोकपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और पाठ्यक्रम समन्वयक, ने सदन को बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी दी जायगी।

डॉ. सुलीप कुमार माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट के पूर्व कुलपति डॉ. के. एम.



बुजर बरुआ का स्वागत किया; डॉ. सचिन सुरोशे, राष्ट्रीय कार्यक्रम समन्वयक, हनी बी, आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली; विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों के प्रतिभागी और अन्य सभी उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में वर्तमान मछली उत्पादन 5.6 लाख टन है, हालांकि उत्पादन क्षमता बहुत अधिक है। उन्होंने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान संसाधन व्यक्तियों के साथ बातचीत करने का आग्रह किया।

डॉ. सचिन सुरोशे ने कहा कि निवास स्थान के विनाश और अन्य कारकों के कारण मछलियों सहित पौधों और जानवरों की कई



प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं। प्राकृतिक आवासों का संरक्षण और सतत उपयोग भविष्य के लिए जरूरी है। उन्होंने प्रशिक्षुओं को संसाधन व्यक्तियों से सीखने और क्षेत्र में मत्स्य पालन विकास के लिए काम करने की सलाह दी।

डॉ. के. एम. बुजर बरुआ ने प्रशिक्षण व्याख्यानों का सार प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भारत में मत्स्य पालन क्षेत्र की वृद्धि शानदार रही है। देश का वर्तमान मछली उत्पादन 16.25 मिलियन टन है, जिसमें नदियों, बाढ़ के मैदानों, तालाबों, झीलों और परित्यक्त जल निकायों के रूप में पर्याप्त मत्स्य संसाधन होने के बावजूद पूर्वोत्तर केवल 0.6 मिलियन टन का उत्पादन करता है। असम में हाल के वर्षों में मत्स्य पालन के क्षेत्र में जबरदस्त वृद्धि की। मेघालय ने अपने जलीय कृषि मिशन के तहत 10,000 तालाब बनाने की भी पहल की है। समुद्री से अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन तक मछली उत्पादन में आदर्श परिवर्तन हुआ है। कुल उत्पादन में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन से मछली उत्पादन का हिस्सा पिछले कुछ वर्षों में 38% से बढ़कर 70% हो गया है। भारत सरकार ने हाल ही में समुद्री मत्स्य पालन में सुधार के लिए 'सागर परिक्रमा' योजना और अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन को सहायता प्रदान करने के लिए पीएमएमएसवाई योजना शुरू की है। लघु और सीमांत (कारीगर) को हाल ही में उचित महत्व दिया गया है। संयुक्त राष्ट्र ने 2022 को कारीगर मत्स्य पालन और जलीय कृषि का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है। डॉ. के. एम. बुजर बरुआ ने खुले जल में मछली पालन में आने वाली समस्याओं के साथ-साथ बेहतर प्रौद्योगिकियों और नीति समर्थन के माध्यम से उत्तर पूर्वी क्षेत्र से मछली उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में एनक्लोजर कल्चर का प्रयास किया गया था, लेकिन इसमें सीमित सफलता मिली। आईसीएआर एनई द्वारा एनईएच क्षेत्र के लिए उमियाम जलाशय में केज कल्चर तकनीक का प्रयास 1982-83 में किया गया था। प्रौद्योगिकी को कम अपनाने के कारणों का अध्ययन किया जाना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो प्रौद्योगिकी में

और सुधार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र के अधिकांश लोग मछली खाने वाले हैं। मछली के कई स्वास्थ्य लाभ हैं इसलिए लोग मछली की ओर रुख कर रहे हैं और कई लोग रीसर्कुलेटरी एकाकल्चर सिस्टम (आरएएस), बायोफ्लोक तकनीक और एकापोनिक्स जैसी नई जलीय कृषि प्रौद्योगिकियों को अपनाने में रुचि रखते हैं। उन्होंने राय दी कि आरएएस प्रौद्योगिकी को मान्य और प्रचारित करने की आवश्यकता है। बायोफ्लॉक को क्षेत्र में ले जाया गया है लेकिन इसके सफल होने से पहले कुछ मुद्दों पर ध्यान देने की जरूरत है। इन सभी तकनीकों पर डेटा एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने की आवश्यकता है। एकापोनिक्स एक और तकनीक है जिसमें उच्च





क्षमता है। दलदल की मिट्टी में उच्च कार्बन सामग्री होती है और इसका उपयोग मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार के लिए किया जा सकता है। उन्होंने कृषि और मत्स्य पालन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया क्योंकि अधिक से अधिक लोग व्यावसायिक खेती के लिए एआई और आईटी प्रौद्योगिकियों को अपना रहे हैं। उन्होंने महसूस किया कि पूर्वोत्तर क्षेत्र से मछली उत्पादन को दोगुना करने के लिए तकनीकी और नीतिगत सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन सत्र दिनांक 10.11.23 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. बी एन सैकिया, डीन, सीवीएससी, एएयू, खानापारा उपस्थित थे। डॉ. एस.के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम उपयोगी रहा। भारत अब दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है। एनईएच क्षेत्र में अंतर्स्थलीय खुले जल संसाधन प्रचुर मात्रा में हैं, जिनसे आईसीएआर-सिफरी द्वारा विकसित प्रबंधन दिशानिर्देशों और प्रौद्योगिकियों के कार्यान्वयन के माध्यम से मछली उत्पादन में वृद्धि संभव है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सोना येंगकोकपम ने प्रशिक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत की। त्रिपुरा के एक प्रतिभागी श्री रिजॉइस ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में प्रसन्नता व्यक्त की और बताया कि नया ज्ञान सीखने को मिला है। असम की एक अन्य प्रतिभागी सुश्री छायाकिना दास ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में मत्स्य पालन और जलीय कृषि के बुनियादी और व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की गई, जो बहुत समृद्ध थी। मुख्य अतिथि एवं केन्द्र प्रमुख द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं प्रशिक्षण सार-संग्रह वितरित किये गये। डॉ. बी एन सैकिया, डीन, सीवीएससी, खानापारा ने अपने भाषण में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम और आईसीएआर-सिफरी के सफल समापन के लिए बधाई दी। डॉ. सैकिया ने इस बात पर जोर दिया कि मत्स्य पालन क्षेत्र अन्य कृषि क्षेत्रों की तुलना में उच्च दर से बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर में मत्स्य पालन क्षेत्र की क्षमता वर्तमान उत्पादकता से अधिक है। समय आ गया है जब उपभोक्ता गुणवत्तापूर्ण मछली की तलाश कर रहे हैं। मछली के मांस में पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड (पीयूएफए) की मौजूदगी इसे उच्च गुणवत्ता वाला भोजन बनाती है। उत्पादन से उपभोग तक खाद्य श्रृंखला के माध्यम से क्षेत्र का प्रौद्योगिकी आधारित विकास समय की मांग है। मछली पोषण और रोगविज्ञान महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिनमें सहयोगात्मक तरीके से अनुसंधान किया जाना चाहिए। वरिष्ठ वैज्ञानिक और पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. ए.के. यादव ने समापन सत्र के लिए धन्यवाद प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया।



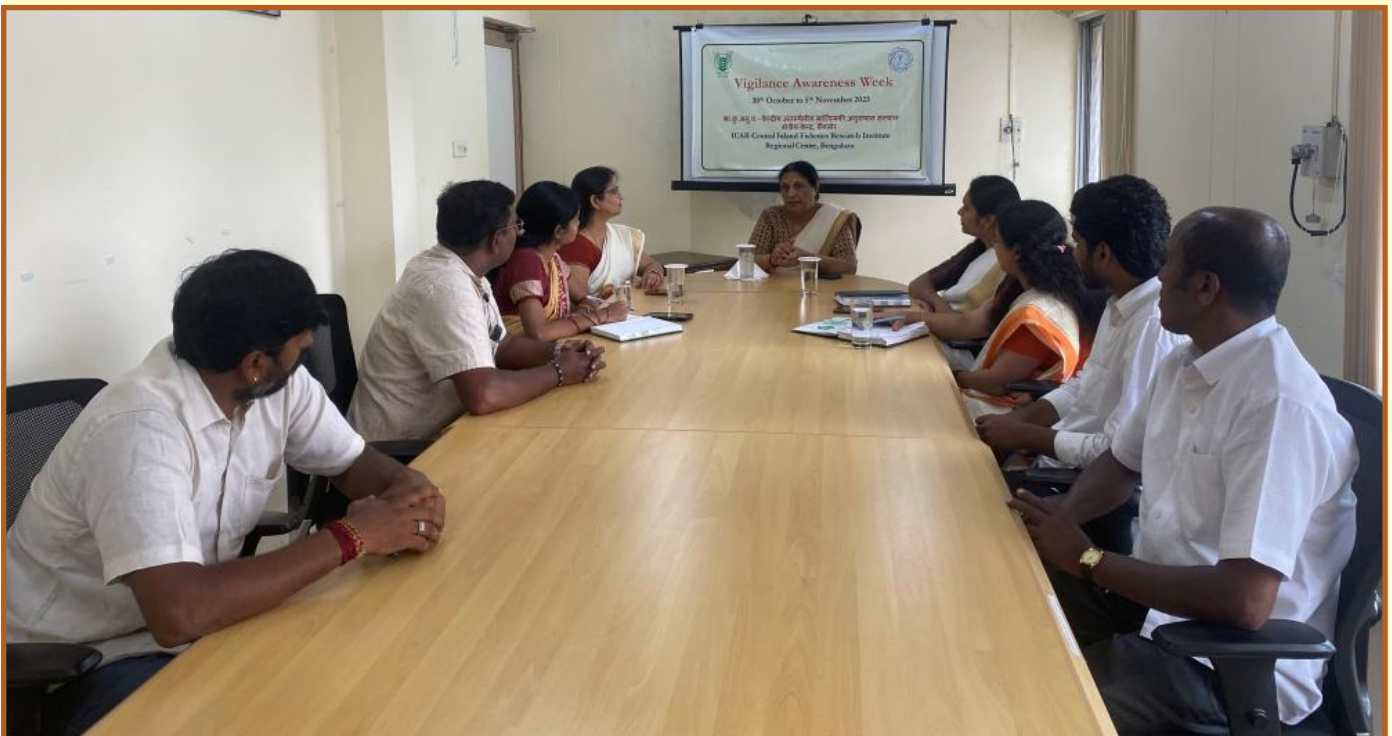


## 30 अक्टूबर से 5 नवंबर 2023 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

संस्थान ने 30 अक्टूबर से 5 नवंबर 2023 के दौरान "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" मनाया, जिसका विषय "भ्रष्टाचार का विरोध करे., राष्ट्र के



प्रति समर्पित प्रतिबद्ध रहें" था। सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रम श्रृंखला की शुरुआत 30 अक्टूबर को अधिकारियों और कर्मचारियों को शपथ दिलाकर की गई। प्रभारी निदेशक, आईसीएआर-सिफरी द्वारा। संस्थान के कई कर्मचारियों ने भी ई-शपथ ली। परिसर में बड़ी संख्या में पोस्टर, बैनर और तख्तियां प्रदर्शित की गईं, जिनमें कार्यस्थल और समाज में भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों को दर्शाया गया है। 31 अक्टूबर को, सभी कर्मचारियों ने भ्रष्टाचार से लड़ने में एकजुटता और एकता दिखाते हुए कृष्णा गार्डन में एक मानव श्रृंखला बनाई। मानव श्रृंखला के बाद स्थानीय मोनीरामपुर बस स्टॉप तक एक वॉकथॉन का आयोजन किया गया, भ्रष्टाचार के बारे में आम जनता को जागरूक करने और इसके





खिलाफ आवाज उठाने के लिए। वॉकथॉन ने स्थानीय लोगों और यात्रियों में काफी रुचि जगाई। 31 अक्टूबर को, सतर्कता पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक इन-हाउस ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। 1 नवंबर को, शोध विद्वानों और अन्य संविदा कर्मचारियों के लिए समाज और कार्यस्थल में होने वाले भ्रष्टाचार के बारे में जानने के लिए एक तात्कालिक प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। 2 नवंबर को स्टाफ के लिए क्रिज कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्थानीय स्कूलों के छात्रों के लिए सतर्कता, भ्रष्टाचार और अखंडता पर विभिन्न मुद्दों पर एक निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 4 स्कूलों के वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं के 45 छात्रों ने भाग लिया। सप्ताह भर चलने वाला कार्यक्रम 06 नवंबर 2023 को एक समापन समारोह के माध्यम से समाप्त हुआ जिसमें श्री रजनीश मीना, आईआरएस, उपायुक्त, जीएसटी इंटेलेजेंस महानिदेशालय (डीजीजीआई) कोलकाता जोनल यूनिट मुख्य अतिथि थे। उन्होंने भ्रष्टाचार से निपटने में प्रौद्योगिकी की भूमिका के साथ-साथ नैतिक आचरण, ईमानदारी और अखंडता के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए एक विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया। प्रभारी निदेशक डॉ. श्रीकांत सामंत ने भ्रष्टाचार मुक्त संगठन बनाने के लिए कार्यस्थल पर पारदर्शिता और निवारक सतर्कता के महत्व पर चर्चा की।



संस्थान के सतर्कता अधिकारी डॉ. डी. के. मीना ने स्वागत भाषण दिया और सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान की गई गतिविधियों के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी। कार्यक्रम का समापन डॉ. एस. के. नाग, प्रधान वैज्ञानिक, मत्स्य संसाधन और सूचना विज्ञान प्रभाग द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

## भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने प्रयागराज के संगम पर विश्व मत्स्य पालन दिवस मनाया



भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (CIFRI), प्रयागराज द्वारा 21 नवंबर 2023 विश्व मत्स्य पालन के अवसर पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम मनाया गया। यह कार्यक्रम प्रयागराज में गंगा और यमुना नदी के संगम तट पर आयोजित किया गया था। इस अवसर पर मछुआरे, तीर्थयात्री, छात्र, साधु आदि सहित 100 से अधिक प्रतिभागी उपस्थित थे। कार्यक्रम का आयोजन गंगा टास्क फोर्स के सहयोग से किया गया। दर्शकों को मछली और गंगा नदी के बारे में जागरूक किया गया। कार्यक्रम को डॉ. धर्म नाथ झा, केंद्र प्रमुख, आईसीएअर-सिफरी, प्रयागराज ने संबोधित किया। उन्होंने मछुआरा समुदाय के लिए नदी और मछली के महत्व को समझाया और इसके





जीर्णोद्धार और संरक्षण के लिए जागरूक किया। उन्होंने बताया कि गंगा नदी मानव सभ्यता के लिए महत्वपूर्ण है और हमें उसका सम्मान करना होगा, उसे स्वच्छ करना होगा और उसे जीवित करना होगा। उन्होंने मछुआरों को भी आगाह किया कि वे छोटे आकार की इंडियन मेजर कार्प्स (आईएमसी) मछलियों को न पकड़ें। यदि ये मछलियाँ जाल में आती हैं, तो वापस नदी में छोड़ दी जाती हैं। इससे इन मछलियों की आबादी बढ़ाने में मदद मिलेगी जो अंततः गंगा को स्वच्छ रखने में मदद करेगी। गंगा टास्क फोर्स के लेफ्टिनेंट कर्नल सुशील गुहानी ने दर्शकों को



संबोधित किया और लोगों से गंगा नदी को साफ रखने और इसकी जैव विविधता को संरक्षित करने का आग्रह किया। इससे अंततः नदी की पारिस्थितिक स्थिति और तट पर रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।



## भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने "अखिल भारतीय" स्तर पर विश्व मत्स्य पालन दिवस मनाया



विश्व मत्स्य पालन दिवस का उद्देश्य अत्यधिक मछली पकड़ने और हमारे मीठे पानी और समुद्री संसाधनों की स्थिरता के लिए अन्य गंभीर खतरों की ओर ध्यान आकर्षित करना है। इस वर्ष सिफरी ने 'अखिल भारतीय' स्तर पर विश्व मत्स्य पालन दिवस मनाया। इस वर्ष विश्व मत्स्य पालन दिवस का विषय है "छोटे पैमाने पर कारीगर मत्स्य पालन के लिए सक्षम नीति वातावरण का निर्माण करें।"

इसे ध्यान में रखते हुए, सिफरी ने हसनाबाद, पश्चिम बंगाल, वाझानी जलाशय, केरल और संगम, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में तीन जन जागरूकता शिविर आयोजित किए।

इन जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से 350 से अधिक छोटे पैमाने के मछुआरों को पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य प्रबंधन और संरक्षण के महत्व पर जागरूक किया गया। विश्व मत्स्य पालन दिवस, 2023 में, आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने असम सरकार के मत्स्य पालन





निदेशालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, बैंगलोर ने मत्स्य पालन विभाग, कर्नाटक द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। पूरे कर्नाटक में 1000 से अधिक लोगों ने इस कार्यक्रम को देखा।

विश्व मत्स्य पालन दिवस के अवसर पर, मत्स्य पालन विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने अहमदाबाद, गुजरात में एक वैश्विक मत्स्य पालन सम्मेलन का आयोजन किया और क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, वडोदरा ने सिफरी की प्रौद्योगिकियों और उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए प्रदर्शनी में भाग लिया।

संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने भी मंत्रालय द्वारा अहमदाबाद, गुजरात में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।

उत्सव के एक भाग के रूप में, सिफरी के 'मिशन 3000' के तहत हसनाबाद, सुंदरबन में मछुआरा समुदाय की 84 महिलाओं को मछली के बीज और मछली फीड जैसे मत्स्य पालन इनपुट वितरित किए। जलाशय के आदिवासी मछुआरों की आजीविका का समर्थन करने के लिए केरल के वज़हानी जलाशय में एट्रोपुल्स सुरैटेंसिस बीजों का भंडारण किया गया था। संरक्षण आवश्यकताओं, आवास बहाली और मौजूदा नीतियों के बारे में छोटे पैमाने के मत्स्य पालन को संवेदनशील और जागरूक करने के लिए आईसीएआर-सिफरी द्वारा "अखिल भारतीय" स्तर पर विश्व मत्स्य पालन दिवस मनाया गया।



## भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने झंडा दिवस, सांप्रदायिक सद्भाव अभियान और धन संचय सप्ताह मनाया ।



भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के स्टाफ सदस्यों ने शांति, सद्भाव और राष्ट्रीय एकता पर संदेश फैलाने और सांप्रदायिक भावना को बढ़ावा देने और मजबूत करने के लिए 19-25 नवंबर, 2023 तक सांप्रदायिक सद्भाव अभियान और धन-संचय सप्ताह और 24 नवंबर 2023 को झंडा दिवस मनाया। संगठन के कर्मचारियों के बीच सामंजस्य। संस्थान ने इस अभियान को भारत सरकार के गृह मंत्रालय के साथ एक स्वायत्त संगठन, नेशनल फाउंडेशन फॉर कम्युनल हार्मोनी, नई दिल्ली के भागीदार के रूप में मनाया। 19 नवंबर 2023 को सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता-विरोधी और अहिंसा विषय पर शपथ ली गई। सप्ताह भर चलने वाले संवेदीकरण कार्यक्रम में कर्मचारियों को संवेदनशील बनाने के लिए संस्थान के विभिन्न स्थानों पर बैनर और पोस्टर का प्रदर्शन शामिल था। सांप्रदायिक



सद्भाव का पालन करके भाईचारे और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना इसका उद्देश्य था। इसके अलावा, सांप्रदायिक हिंसा के शिकार बेसहारा बच्चों की मदद के लिए स्वैच्छिक धन जुटाने का अभियान भी आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्रीय केंद्रों और स्टेशनों के कर्मचारियों सहित संस्थान के कर्मचारियों ने उत्साह और उमंग के साथ योगदान दिया। झंडा दिवस 24 नवंबर 2023 को, सप्ताह के अंतिम कार्य दिवस पर एक आधिकारिक समारोह के साथ मनाया गया, जिसमें निदेशक, प्रभागों के प्रमुखों, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी और अन्य स्टाफ सदस्यों ने सांप्रदायिक सद्भाव की भावना को मजबूत करने के महत्व पर अपने विचार साझा किए।

## आईसीएआर-सिफरी गुवाहाटी ने 'पूर्वोत्तर भारत में खुले पानी में मत्स्य पालन प्रबंधन के लिए रणनीतियों' पर एनईआर के मत्स्य अधिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।



भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने 22-24 नवंबर, 2023 के दौरान 'पूर्वोत्तर भारत में खुले पानी में मत्स्य पालन प्रबंधन के लिए रणनीतियाँ' पर पूर्वोत्तर राज्यों के मत्स्य अधिकारियों के लिए 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित था और डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर और डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था। संस्थान ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से मत्स्य अधिकारियों को अंतर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन के प्रबंधन पर उत्पन्न नवीनतम तकनीकी जानकारी का प्रसार किया है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र 22 नवंबर, 2023 को आयोजित किया गया था जिसमें डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और डॉ. आर. मुरुगेसन, निदेशक, एनआईआरडी और पीआर, गुवाहाटी उपस्थित थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों (असम, मेघालय, मणिपुर, सिक्किम, त्रिपुरा और मिजोरम) के 25 मत्स्य अधिकारी भाग ले रहे हैं; कोलॉग-कोपिली (एनजीओ), बोगीबारी, असम और री-भोई किसान संघ, मेघालय से भी प्रतिभागी उपस्थित थे। इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. माझी ने पूर्वोत्तर क्षेत्र की प्राथमिकताओं और आवश्यकताओं पर जोर देते हुए देश के अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र का एक सिंहावलोकन दिया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में 20,875 किमी की लंबाई तक फैली नदियों और नहरों को छोड़कर जलाशयों, टैंकों और तालाबों, बील, ऑक्सबो झीलों और अन्य परित्यक्त जल के मामले में 3.77 लाख हेक्टेयर जल संसाधन हैं। उन्होंने आगे जोर दिया कि 2021-22 के दौरान पूर्वोत्तर क्षेत्र का कुल मछली उत्पादन 5,69,400 मीट्रिक टन (एमटी) था (असम: 4,17,000 मीट्रिक टन, त्रिपुरा: 82,000 मीट्रिक टन, मणिपुर: 33,000 मीट्रिक टन, नागालैंड: 9,000 मीट्रिक टन, मिजोरम: 5,000 मिलियन टन, मेघालय: 18,000 मिलियन टन, अरुणाचल प्रदेश: 5,000 मिलियन टन और सिक्किम: 400 मिलियन टन), जो इस क्षेत्र की लगभग 85% मांग को पूरा करता है। डॉ. मुरुगेसन ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले विभागीय कर्मचारियों से मछली किसानों को वैज्ञानिक मछली पालन प्रथाओं को सफल बनाने के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया। उन्होंने एकीकृत मछली पालन प्रणाली पर जोर दिया क्योंकि इससे इनपुट की लागत कम हो जाती है और उद्यम की लाभप्रदता बढ़ जाती है।





वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. प्रोनोब दास और डॉ. दीपेश देबनाथ ने कार्यक्रम का समन्वय किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में खुले जल में मत्स्य पालन प्रबंधन पर वर्तमान और विकसित विज्ञान पर दो दिनों की आंतरिक चर्चा और एक दिवसीय क्षेत्र का दौरा शामिल था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन सत्र 24.11.23 को आयोजित किया गया था। डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सिफरी आरसी, गुवाहाटी ने मुख्य अतिथि श्रीमती काव्यश्री महंत, आईएएस, सचिव, मत्स्य पालन विभाग, सरकार का स्वागत किया। असम के और

सम्मानित अतिथि श्री आशिम कुमार बोरा, प्रभारी, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी), एनई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। मैडम महंत ने अपने भाषण में कहा कि असम अंतर्स्थलीय खुले पानी में समृद्ध है जिसे मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रबंधित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर न केवल देश के बाकी हिस्सों से अलग है, बल्कि पूर्वोत्तर के सभी राज्य भी एक-दूसरे से अलग हैं, और इसलिए प्रौद्योगिकियों को एक विशेष राज्य और जल संसाधन के अनुरूप तैयार करने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्राप्त ज्ञान का उपयोग करने का आग्रह किया और उन्हें सफल समापन पर बधाई दी।

श्री आशिम कुमार बोरा, प्रभारी, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी), एनई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने एनएफडीबी की गतिविधियों के बारे में बताया और उनके संगठन और आईसीएआर-सिफरी द्वारा अतीत में किए गए सहयोगात्मक कार्यक्रमों के बारे में उल्लेख किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक और पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रोनोब दास ने एक संक्षिप्त प्रशिक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत की। सभी राज्यों के प्रतिभागियों ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम की सामग्री बहुत जानकारीपूर्ण थी और टिकाऊ जलीय कृषि और प्राकृतिक खेती मॉडल के प्रदर्शन के लिए कलॉग-कपिली एनजीओ की क्षेत्र यात्रा बहुत प्रासंगिक थी। मुख्य अतिथि एवं केन्द्र प्रमुख द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं प्रशिक्षण सार-संग्रह वितरित किये गये। वरिष्ठ वैज्ञानिक और पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. दीपेश देबनाथ ने समापन सत्र के लिए धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

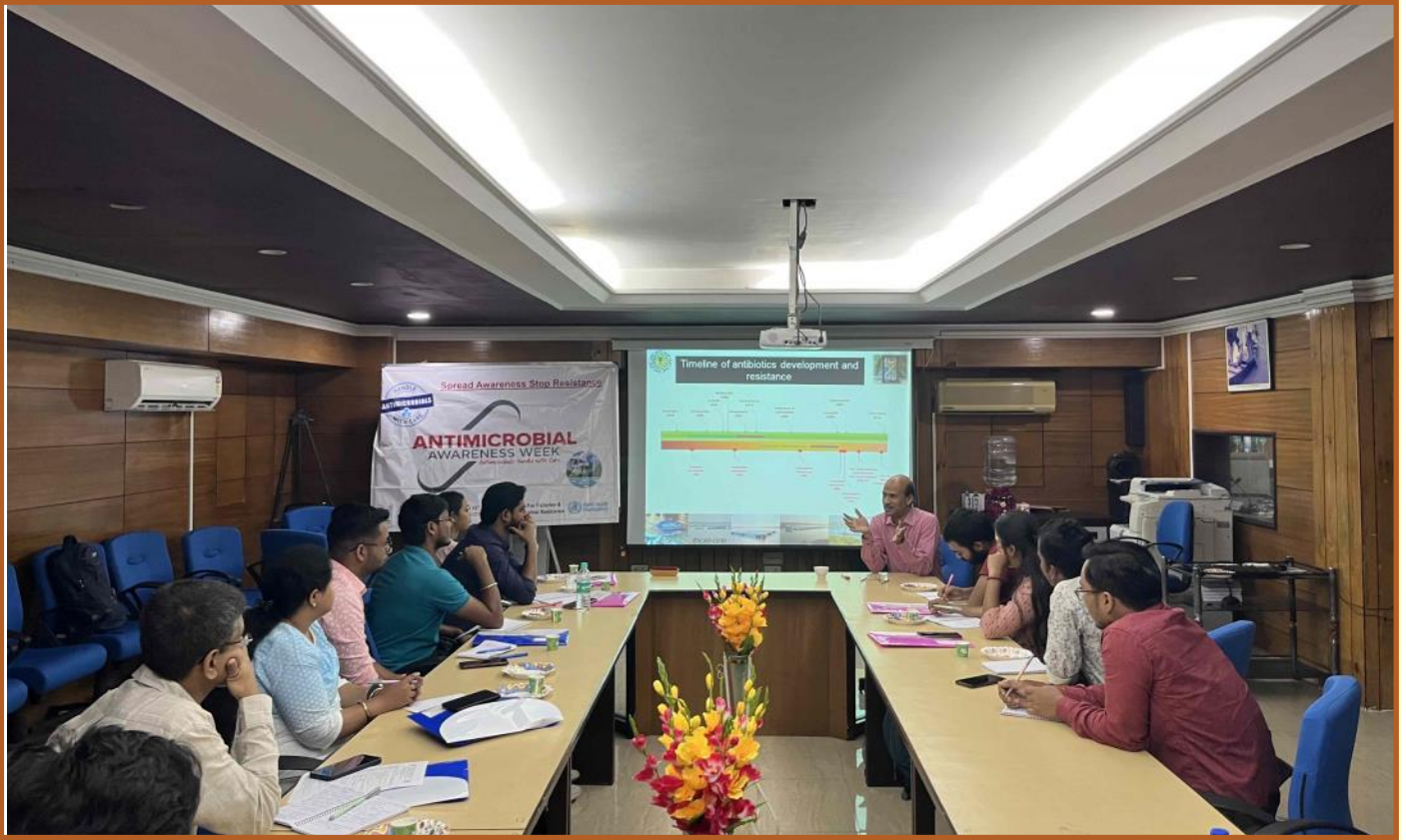


## भा०कृ०अनु०प०-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान, बैरकपुर ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध जागरूकता सप्ताह, 2023 का आयोजन किया



आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर ने 18 से 24 नवंबर 2023 के दौरान विश्व रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह (WAAW) का आयोजन किया, जिसका प्रमुख विषय था “एक साथ रोगाणुरोधी प्रतिरोध को रोकना”। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वैश्विक रोगाणुरोधी प्रतिरोध के बारे में जागरूकता बढ़ाना और दवा प्रतिरोधी संक्रमणों के उभरने और फैलने से बचने के लिए आम जनता, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और नीति निर्माताओं के बीच इसके उपयोग के उत्तम तरीके को प्रोत्साहित करना था। सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रम के दौरान, आईसीएआर-सिफरी ने कोलकाता और उसके आसपास के विभिन्न कॉलेजों में छात्रों और संकायों के लिए व्याख्यानों की श्रृंखला सहित विभिन्न गतिविधियाँ कीं, जिससे कृषि विज्ञान केंद्र, मालदा में मछुआरों और कृषि कृषकों और गंगा नदी के फरक्का के हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा हुई। डॉ. बि. के. दास, निदेशक और डॉ. एस. के. मन्ना “मत्स्य प्रबंधन” परियोजना के प्रधान अन्वेषक के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। डॉ. ए.के.साहू ने कहा





कि एमआर पूरे ग्रह और विशेष रूप से मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र के लोगों के लिए एक गंभीर खतरा बन गया है। इसलिए, पृथ्वी की रक्षा के लिए सामूहिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। 21 नवंबर को, आईसीएआर-सिफरी द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र,, मालदा और फरक्का के सहयोग से एमआर पर एक मेगा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रमुख हितधारक मछली किसान, कृषि किसान, गंगा प्रहरी (गंगा प्रदूषण और जैव विविधता संरक्षण की देखभाल करने वाले) के प्रतिनिधि थे। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. दीपक नायक, केवीके के एसएमएस डॉ. शैलेश कुमार और डॉ. ए. के. साहू ने एंटीबायोटिक दवाओं के जिम्मेदार उपयोग और रोगाणुरोधी प्रतिरोध के विकास के तंत्र पर जागरूकता पैदा करने के लिए 80 किसानों के साथ बातचीत की। एंटीबायोटिक दवाओं के अंधाधुंध उपयोग, घरेलू और कृषि सीवेज को बिना उपचार के छोड़े जाने और जानवरों के शवों को नदियों में गिराने के मुद्दों पर चर्चा की गई। 18 से 24 नवंबर 2023 के दौरान पूरे कार्यक्रम में छात्रों, किसानों, मछुआरों और गंगा प्रहरी का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 550 लोगों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. बि. के. दास के समग्र मार्गदर्शन में डॉ. ए.के. साहू और डॉ. ए.के. बेरा द्वारा किया गया।



## मुख्य शोध उपलब्धियां

- वर्ष 2020-23 में गंगा नदी रैंजिंग के प्रभाव से पता चलता है कि 2015-16 में मछली पकड़ की तुलना में गंगा के मध्य खंड में भारतीय मेजर कार्प की पकड़ में 41 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- गंगा के डेल्टाई भाग में पहली बार जलीय पोषी परतों में आर्सेनिक की उपलब्धता का पता चला है और यह पादप प्लवक भोजी मछलियों के लिए चिंता का विषय है।
- अरुणाचल प्रदेश के कामेंग बेसिन में दिरांग नदी के मौसमी अध्ययन में 23 मछली प्रजातियां (पांच प्रवासी प्रजातियों सहित) दर्ज की गईं। जल विज्ञान और पारिस्थितिक मापदंडों के अनुसार पहाड़ी जल धाराओं पारिस्थितिकी स्थानिक शीत जल मत्स्य प्रजातियों के अनुकूल पायी गई। साथ ही, इन जल क्षेत्रों में कई प्रतिबंधित प्रजातियों का संरक्षण, प्रजनन और नर्सरी पालन किया जा सकता है।
- अक्टूबर 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली लैंडिंग 16.092 टन थी, जो अक्टूबर 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ में लगभग 81.83% की वृद्धि दर्शाती है।
- अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत, सागर द्वीप के 252 आदिवासी कृषक महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उनके घर के आँगन में स्थित तालाबों में मछली पालन हेतु उन्हें आदान वितरित किया गया और प्रदर्शन /प्रशिक्षण द्वारा उनका कौशल विकास किया गया है।

## बैठकें

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 25 से 30 अक्टूबर, 2023 तक ढाका में सतत विकास 2023: अनपैकिंग स्थिरता, लचीलापन और इकित्ती पर छठे सीएसडी वार्षिक सम्मेलन में यूनिवर्सिटी ऑफ लिबरल आर्ट्स बांग्लादेश (यूएलएबी), ढाका, बांग्लादेश में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने पिछले 5 वर्षों के कार्यों की समीक्षा और अगले 5 वर्षों (2024-2028) के लिए कार्य योजना तैयार करने के लिए दिनांक 31 अक्टूबर से 04 नवंबर 2023 तक काहिरा, मिस्र में वर्ल्डफिश-आईसीएआर परियोजना कार्यशाला में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 15 नवंबर 2023 को परालाखेमंडी, गजपति जिला ओडिशा में पहली बार जिला

स्तरीय "मत्स्य ओ प्राणिसम्पद मेला-2023 में भाग लिया। इस मेले का उद्देश्य मत्स्य पालन और प्राणी संसाधन विभाग के विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से आदिवासी समुदाय की आर्थिक स्थिति को सशक्त करना है।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 16 नवंबर 2023 को अरुणाचल प्रदेश के कामेंग बेसिन में मत्स्य पालन और पारिस्थितिकी के आकलन की परियोजना प्रगति की समीक्षा के लिए स्कैटेक एएसए, नॉर्वे के साथ बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 17 नवंबर 2023 को सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में आयोजित परिषद के अधीनस्थ संस्थानों और भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संथान (ICAR-ATARI) के सभी निदेशकों के साथ ऑनलाइन बातचीत बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 17 नवंबर 2023 को मुंबई में आईसीएआर-नेटवर्क प्रोग्राम ऑन प्रिसिजन एग्रीकल्चर (एनईपीपीए) परियोजना पर बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 21 और 22 नवंबर 2023 को अहमदाबाद, गुजरात में वैश्विक मत्स्य पालन सम्मेलन 2023 (जीएफसी- 2023) में भाग लिया। सम्मेलन का आयोजन मत्स्य पालन मंत्रालय, पशुपालन और डेयरी (एमओएफएच एंड डी), भारत सरकार, गुजरात साइंस सिटी, अहमदाबाद, गुजरात द्वारा विश्व मत्स्य पालन दिवस (डब्ल्यूएफडी) के अवसर पर किया गया।
- संस्थान ने भागीदारी मोड में CAS ver 2.0 सॉफ्टवेयर को सफलतापूर्वक विकसित किया। इस सॉफ्टवेयर का उद्देश्य छत्तीसगढ़ सरकार के मत्स्य पालन विभाग द्वारा उपयोग के लिए 10 हेक्टेयर तक के जलाशयों में मछली पकड़ का आकलन करना है।
- स्वच्छता का विशेष अभियान दिनांक 03 से 31 अक्टूबर 2023 को समाप्त हुआ। इस अभियान के तहत अधिकारियों और कर्मचारियों ने विभिन्न स्वच्छता अभियान और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करके संस्थान परिसर, केंद्रों, नदियों के तटों, गांवों आदि में स्वच्छता अभियान के आयोजन में बढ़-चढ़कर भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023 (30 अक्टूबर - 05 नवंबर, 2023) के तहत मुख्यालय और

विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों पर पीआईडीपीआई जागरूकता, कार्यस्थल में नैतिकता आदि पर विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। विभिन्न वक्ताओं ने अपने व्याख्यान दिए और कार्यक्रम में संस्थान कर्मियों ने भाग लिया।

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में दिनांक 02 नवंबर 2023 को "साइबर-अपराध और सुरक्षा" पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस व्याख्यान में हाउसफेड कॉम्प्लेक्स के विभिन्न कार्यालयों के 20 अधिकारियों ने भाग लिया।
- राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के तहत दिनांक 4 नवंबर, 2023 को आयोजित "गंगा उत्सव" सेवड़ाफुल्ली घाट (हुगली नदी के तट) में मनाया गया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने 09 नवंबर 2023 को असम के कामरूप मेट्रो जिले के बागीबारी में स्थित एक गैर-सरकारी संगठन के साथ कलॉग-कपिली में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें भारत के विभिन्न उत्तर पूर्वी राज्यों से मत्स्य पालन विभाग का प्रतिनिधित्व करने वाले 30 अधिकारी शामिल हुए।

## प्रशिक्षण कार्यक्रम

- संस्थान में दिनांक 03-09 नवंबर, 2023 के दौरान नवादा, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें नवादा जिले, बिहार के 31 किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में दिनांक 08-10 नवंबर, 2023 को राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित "उत्पादन वृद्धि के लिए अन्तर्स्थलीय खुले पानी में घेरे में मछली पालन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसमें विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों के 26 मत्स्य पालन अधिकारियों ने भाग लिया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने 07 से 09 नवंबर, 2023 के दौरान ऑनलाइन मोड द्वारा अन्तर्स्थलीय जल निकायों में मत्स्य पालन संवर्धन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें 19 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- संस्थान मुख्यालय बैरकपुर में दिनांक 07-13 नवंबर, 2023 के दौरान "नदी पारिस्थितिकी और मत्स्य प्रबंधन में

वर्तमान प्रगति" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- संस्थान ने दिनांक 07-10 नवंबर, 2023 के दौरान "पश्चिम बंगाल के अन्तर्स्थलीय खुले पानी में पिंजरे में मछली पालन के माध्यम से मछली उत्पादन में वृद्धि" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले के 29 किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान ने जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत 02 नवंबर 2023 को तमिलनाडु के धर्मपुरी जिले के होगेनकल में मछली पकड़ने पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया और इसमें 50 मछुआरों ने भाग लिया था। इस अवसर पर 10 आदिवासी मछुआरों को कोरेकल नाव वितरित किया गया।
- संस्थान ने दिनांक 21 नवंबर, 2023 को उत्तर 24 परगना के हसनाबाद में विश्व मत्स्य पालन दिवस मनाया, जहां अनुसूचित जाति समुदाय की 104 महिलाओं सहित 120 से अधिक लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया।
- विश्व मात्स्यिकी दिवस 21 नवंबर 2023 को संगम, प्रयागराज में जन जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया, इस कार्यक्रम में 110 मछुआरों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 21-22 नवंबर, 2023 के दौरान अहमदाबाद, गुजरात में आयोजित वैश्विक मत्स्य पालन सम्मेलन 2023 के अवसर पर प्रदर्शनी में भाग लिया।

## अन्य

- असम के ब्रह्मपुत्र बेसिन के उरपाद बील में एल. कतला के अंगुलिकाओं (स्टॉकिंग घनत्व 6 अंगुलिका प्रति वर्ग मी. को एचडीपीई पेन (500 वर्ग मीटर क्षेत्र) में 6 महीने तक पालन किया गया। इस अवधि में  $594.31 \pm 29.72$  किलोग्राम का शुद्ध मछली उत्पादन प्राप्त किया। यह समान परिस्थितिकी वाले पूर्वोत्तर क्षेत्र के अन्य आर्द्रभूमि में पेन में मछली पालन के लिए एक मॉडल हो सकता है।
- आर्द्रभूमि के मैक्रोफाइट ग्रसित क्षेत्र का आकलन करने के लिए गोम्पोटा पूर्वी-कोलकाता आर्द्रभूमि का ड्रोन आधारित नमूनाकरण और मल्टीस्पेक्ट्रल इमेजिंग किया।

# सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

## Livelihood upliftment of the tribal women of SaliaSahi, Bhubaneswar Odisha through ornamental fish rearing

**Bhubaneswar, (KCN):** ICAR-CIFRI consistently promotes ornamental fish culture as a means of empowering rural women in different parts of India including West Bengal, Jharkhand, and Odisha with the primary aim to make them self-employed by providing alternative sources of income to the rural tribal women under the STC program.



Under the able leadership and guidance of Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, Barrackpore, 16 units of FRP ornamental fish-rearing tanks were distributed to the tribal women beneficiaries in the presence of the Charter President Dr. Smita Sinha, Director Club Admin Rtn. Shibabrata Kar and other members of the Rotary Club of Bhubaneswar Flamingo. A total of 30 women beneficiaries participated in this program and got motivated to take up ornamental fish rearing

with the support of ICAR-CIFRI. Further, proper hands-on practical training on ornamental fish keeping and breeding will be provided to the beneficiaries at ICAR-CIFRI Barrackpore to strengthen the theoretical and practical skills for ornamental fish culture. The program was jointly organized by ICAR-CIFRI, Barrackpore, and the Rotary Club of Bhubaneswar Flamingo. The program was coordinated by Mr. M. H. Ramteke and Dr. Aparna Roy under the supervision of Dr. B. K. Das, Director ICAR-CIFRI Barrackpore.

## Ranching in river Ganga at Barrackpore under 'National Ranching Programme-2023'

**Kolkata, (KCN):** As a part of National Ranching program-2023 under Namami Gange programme a river ranching was conducted on 27 September, 2023 at Daspara ghat, Barrackpore, West Bengal, on the occasion of concluding workshop under NMCG project on "Stakeholders consultation cum consultative workshop on Hilsa fisheries improvement for sustainable fisheries and conservation in river Ganga".



The ranching programme was graced by several eminent scientist and academicians including Dr. Sandeep Kumar Behera, Consultant NMCG, Dr. D.K. De, Retired Principal Scientist of ICAR-CIFRI and renowned Hilsa expert. Expert from various field of fisheries like Dr. U. Bhowmik, Retired Principal Scientist & Former HoD of ICAR-CIFRI, Dr. Subrata Dasgupta (Retd. Principal Scientist of ICAR-CIFE), Dr. Ashim Kumar Nath, Department of

Zoology, SBKU University, Biodiversity Consultant NMCG praised the efforts of ICAR-CIFRI to increase the fish production in river Ganga through their ranching programmes. He also added that rise in fish population through ranching will aid in increase of other aquatic animals in river Ganga including the Gangetic Dolphin. Along with the river ranching program awareness program on dolphin, fish and hilsa fishery was also conducted. Active participation of local fishers including and civil residents was noticed in the programme. The overall program was successfully conducted with the whole hearted support from the ICAR-CIFRI, NMCG team.

## ICAR-CIFRI organized workshop on "Stakeholders consultation cum consultative workshop on Hilsa fisheries improvement for sustainable fisheries and conservation in river Ganga"

**Kolkata, (KCN):** A workshop under NMCG project on "Stakeholders consultation cum consultative workshop on Hilsa fisheries improvement for sustainable fisheries and conservation in river Ganga" was organized at ICAR-CIFRI, Barrackpore on 27th September 2023. The workshop initiated with a warm welcome extended by Dr. A.K. Sahoo, Co-PI, NMCG Project and briefed on the objectives of the Workshop. Dr. Basanta Kumar Das, Director, ICAR-CIFRI in his opening remarks highlighted the importance of the hilsa and dolphin conservation in the river Ganga and the scientific interventions

taken up by ICAR-CIFRI since 2018. Dr. Sandeep Kumar Behera, Consultant, National Mission for Clean Ganga (NMCG), Mr. Rajdeep Mukherjee, Policy analyst, Bay of Bengal Programme (BoBP-IGO), Mr. G. C. Das, Wild Life Institute of India (WII), Dr. D.K. Dey, Retired Principal Scientist of ICAR-CIFRI, Dr. U. Bhowmik, Retired Principal Scientist & Former HoD of REF Division, ICAR-CIFRI, Dr. Subrata Dasgupta, Retd. Principal Scientist of ICAR-CIFE, Dr. Ashim Kumar Nath, Professor, Department of Zoology, SBKU University, Prof. Sudhir Kumar Das, WBUAFS, and Dr. Gayatri Tripathi,

Principal Scientist, ICAR-CIFE were graced the occasion as expert members. Dr. Sandeep Behera in his opening remarks highlighted the importance of the Hilsa fisheries improvement programme carried out by ICAR-CIFRI since 2018. He updated the status of fish locks operation in Farakka barrage and believed that the fish locks will provide the additional support towards upstream hilsa migration in the river Ganga. Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI outlined the workshop with a brief presentation of the work carried out under NMCG Hilsa Project (Component II) for last 3 years. In the presentation, he



highlighted the project's objectives, significant activities and achievements under the project. Dr. Das explained that more than 90,000 of adult Hilsa were ranching at the upstream of Farakka barrage with an aim to enhance the Hilsa stock in the middle stretch of the river Ganga. He briefed about the hilsa ranching procedure, tagging methods employed and the

recovery of Hilsa in the upstream. Besides Hilsa egg and spawn were also ranching into the river for increasing the juvenile availability and the impact of ranching on hilsa population was also presented. Dr. B.K. Das also presented the pilot-scale experiments conducted under the project for captive breeding and rearing of Hilsa. Issues and challenges related to the

restoration and conservation of Hilsa in river Ganga and their captive rearing was also addressed. During the panel discussion, expert members were appreciated the work carried out by ICAR-CIFRI particularly on there-appearance of Hilsa juveniles and adults in the upstream of the Farakka in river Ganga between Prayagraj to Farakka due

to ranching programme. They emphasized further detailed work on the identification of Hilsa breeding grounds and protect them from destructive fishing. A much research efforts were needed to augment the captive rearing of Hilsa under cages and other culture systems for domestication. They also discussed about the strategies related to the sustainable management of Hilsa in river Ganga and warrant cohesiveness between the state governments and research organization for hilsa fisheries management. Furthermore, challenges like illegal fishing using small mesh nets and brooder collection during peak seasons were

pointed out to be the two utmost important issues. Fish farmers/fishers from Godhakali, Diamond Harbour were also interacted with the expert members and raise few concerns regarding low Hilsa availability and agreed for the extended cooperation for CIFRI activities in future. Finally, the workshop ended formally with a vote of thanks proposed by Dr. D.K. Meena, Co-PI of NMCG. The programme was coordinated by Drs. A.K. Sahoo, D.K. Meena, Santhana Kumar and Mitesh Ramteke with the support of research scholars of NMCG Component II under the overall supervision of Dr. Basanta Kumar Das, Director, ICAR-CIFRI.

## संस्कार उपजातीय सम्प्रदायों के उत्थतिर जन्म पथ चला शुरु

सिद्धांत, पुराणिक, आधुनिक युग में अत्यन्त महत्त्व प्राप्त कर चुके हैं। अतः समाज में इनका प्रतिष्ठापूर्वक स्वीकारण आवश्यक है। अतः समाज में इनका प्रतिष्ठापूर्वक स्वीकारण आवश्यक है। अतः समाज में इनका प्रतिष्ठापूर्वक स्वीकारण आवश्यक है।



अधिकांश उपजातीय सम्प्रदायों के उत्थतिर जन्म पथ चला शुरु।

अधिकांश उपजातीय सम्प्रदायों के उत्थतिर जन्म पथ चला शुरु। अतः समाज में इनका प्रतिष्ठापूर्वक स्वीकारण आवश्यक है। अतः समाज में इनका प्रतिष्ठापूर्वक स्वीकारण आवश्यक है। अतः समाज में इनका प्रतिष्ठापूर्वक स्वीकारण आवश्यक है।

## 5-day training programme on "Inland Fisheries Management" for the fish farmers of Pakur, Jharkhand from 18 - 22nd September, 2023.

A total of 21 farmers including a group of 6 women and one fisheries instructor from Pakur district have participated in the training programme. Pakur district of centrally located Jharkhand State is covered with forest and with hilly terrain. According to the district

## Swachhata Hi Seva Activities in West Bengal

portal, this district is blessed with two dams and numerous small waterbodies like ponds and tanks. This training was conducted to enhance farmers' knowledge on scientific fish farming. The trainees were taught various aspects of fish management such as pond construction and culture, fish feed

management, Natural fish food organisms in inland open waters, fish health management, fish feed preparation, composite fish culture, Ornamental fish culture etc. Besides, the trainees were given a demonstration cum practical orientation on the Ornamental fish culture and Pongus culture in the reservoir at Pakur district is also blessed with

through fisheries for livelihood improvement. The program has been oriented to strengthen the practical skills of the farmers for enhancing fish production in open waters including ponds & tanks, through on-field exposure visits and field demonstrations besides classroom sessions. About 86% of the trainees expressed high level of satisfaction from the capacity building programme.

New MP who comr parli mass recet of % Lok: Birl have from the 1 caust askin u p p

## प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार झा, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, (आइएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फॅक्स: +91-33-25920388; ई-मेल: director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in